संरक्षक की कलम से ...

प्रिय पाठकों,

हम सभी इस बात से भली-भांति अवगत हैं कि जल जीवन हेतु अमृत तुल्य है। जीवन के सभी रूपों को बनाए रखने, खाद्य उत्पादन, आर्थिक विकास और जन-मानस के कल्याण के लिए जल अति आवश्यक है। हमारे देश के जल संसाधन पेयजल, कृषि, जलविद्युत उत्पादन, पशुधन उत्पादन, औद्योगिक गतिविधियों, वानिकी, मत्स्य पालन, नौपरिवहन, मनोरंजक गतिविधियों और पारिस्थितिक आवश्यकताओं आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जल समाज के विकास और कार्य-पद्धति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अब इसे सतत विकास के लिए एक उच्च प्राथमिकता वाले संसाधन के रूप में माना जाता है। भारत में, जल के स्थानिक और कालिक वितरण में बड़ी असमानता के कारण, वर्षभर पर्याप्त मात्रा में निरंतर पानी उपलब्ध कराना निर्णय निर्माताओं के सामने एक बड़ी चुनौती है। आज जल सुरक्षा एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है। हमारे देश में, यह विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और बाढ़ एवं सूखे की प्राकृतिक चरम घटनाओं के कारण बढ़ते खतरों, शहरी, उपनगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच पानी के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण है। देश का सकल घरेलू उत्पाद स्वच्छ जल की पहुंच पर बहुत अधिक निर्भर करता है।

आज भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में शुद्ध जल उपलब्धता की स्थिति बदतर होती जा रही है। हमारी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त पानी सुनिश्चित करने के लिए जल संसाधनों का सतत विकास एवं प्रबंधन सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है। वर्षों से हमारे अभियंताओं, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और नियोजकों के निरंतर प्रयासों से देश के जल संसाधनों के उपयोग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। बेहतर प्रयासों के बाबजूद, हम अभी भी जल क्षेत्र में कई कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। विभिन्न स्रोतों से प्रदूषक भार बढ़ने के कारण सतही और भूजल संसाधनों की गुणवत्ता खराब हो रही है। ऐसी स्थिति में जल संसाधन प्रबंधन एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। व्यर्थ बहने वाले जल को सतही एवं भूजल जलाशयों में एकत्र करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों की जानकारियों को सामान्य जनमानस तक हिंदी भाषा के माध्यम से पहुंचाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान पिछले 13 वर्षों से इस पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित करना है। विद्वत लेखकों की रोचक एवं महत्वपूर्ण रचनाओं के सहयोग से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। हमें ज्ञात है कि जीवन के इस अति-आवश्यक संसाधन की सुरक्षा की जिम्मेवारी देश के हर नागरिक की है। अतः देश के हर नागरिक को जल संरक्षण से जुड़ना होगा। आज हमें जल के महत्व, उसके संरक्षण तथा बूंद-बूंद के सदुपयोग की जानकारी आम जनता को देने की आवश्यकता है। हमारे देश में समय और स्थान के अनुसार जल संबंधी समस्याएं भिन्न-भिन्न हैं। इन्हीं समस्याओं के समाधानों और उपायों की जानकारी को जनमानस तक पहुंचाने का कार्य हमारी यह पत्रिका विगत 13 वर्षों से निरंतर करती आ रही है।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के लिए वर्षभर हिंदी की भिन्न-भिन्न गतिविधियां आयोजित करता रहता है। हमारा प्रयास रहता है कि प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग किया जाए। उल्लेखनीय है कि संस्थान के कार्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के हैं और आमतौर पर यह समझा जाता है कि तकनीकी कार्यों का निष्पादन हिंदी में कर पाना सहज नहीं है। फिर भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए इन कार्यों में हिंदी का समुचित प्रयोग करने के प्रयास जारी हैं और इस दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन काफी हद तक सफलता मिल भी रही है।

मैं उन समस्त विद्वत लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपने रोचक, महत्वपूर्ण तथा उपयोगी लेख भेजकर इसके प्रकाशन में हमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्रिका का संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की कामना करता हूं।

(डॉ. सुधीर कुमार)